ISSN: 2394-773X
Vol-06-Issue-06-June-2020

# दोहरे शतक की ओर बढ़ते कदमः मध्यप्रदेश संदेश

**डॉ. सोनाली नरगून्दे**
**एसोसिएट प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं जनसंचार अध्ययनशाला,देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर**
**डॉ. मनीष काले**
**अतिथि व्याख्याता, पत्रकारिता एवं जनसंचार अध्ययनशाला,देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर**

---

**सारांक्ष**

समाज में यदि परिवर्तन लाना है तो यह काम केवल विचारों से ही हो सकता है। विचार कभी मरते नहीं है और परिवर्तन की दिषा में विचार ही पहला कदम होते है। विचारों की साधना को ही पत्रिका कहा जाता है, जो नवजागरण का काम करती है। पत्रिकाओं की बात करें तो यह बात और भी सार्थक नजर आती है। पत्रिकाएं पूरी तरह से विचार प्रधान होती है और उनका लक्ष्य ही व्यक्तिगत विकास के माध्यम से राष्ट्र का निर्माण करना होता है। आज भी ऐसी कई पत्रिकाएं है, जो सालों से जनमानस का नवजागरण कर रही है। ऐसी ही एक पत्रिका है मध्यप्रदेश संदेश, जो करीब 168 ये प्रकाशित हो रही है। इस लम्बे समय में इस पत्रिका ने उतार–चढ़ाव के कई दौर देखे लेकिन इसके बाद भी आज भी अपना वजूद बनाए हुए है। ऐसे समय में जब कई बड़ी पत्रिकाओं पर संकट के बादल छाए हुए है, मध्यप्रदेश संदेश एक ऐसी पत्रिका है जो चुनौतियों का डटकर सामना कर दूसरों के लिए प्रेरणा बन रही है। शोध पत्र का उद्देश्य ही मध्यप्रदेश संदेश के विकास और प्रबंधन पर प्रकाश डालना है।

**मूल शब्द**– पत्रिका, प्रबंधन, चुनौतियां, समाधान, आदर्श।

---

**प्रस्तावना**

मानव मन स्थिर नहीं है। मानव को हमेषा से ही परिवर्तन चाहिये। लोकरुचि हमेषा से ही परिवर्तन का प्रमुख कारण रही है। पत्रिकाओं की बात करें तो इस कसौटी पर वे खरी उतरी है। सामाजिक चेतना, जागरूकता पैदा करने में पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण स्थान रहा है। भारत में पत्रकारिता के उद्भव से लेकर आज तक की बात करें तो पत्रिकाओं ने सूचनाओं और विचारों को आम आदमी तक पहुंचाने में महती भूमिका अदा की है। मध्यप्रदेश संदेश एक ऐसी ही पत्रिका है, जिसने पत्रकारिता का वह दौर भी देखा है जब जन आंदोलन खड़ा करने में पत्रिकाएं हथियार के रूप में काम आयी तो आज का वह दौर भी देख रही है, जब अधिक से अधिक सूचनाओं का होना ही शक्तिशाली होने का प्रतीक है। वर्तमान में यह मध्यप्रदेश शासन द्वारा प्रकाशित होती है। इस पत्रिका की दो महत्वपूर्ण उपलब्धि है, जिसमें पहली इसकी प्रसार संख्या और दूसरी मानदेय है। यह देश की पहली सरकारी पत्रिका है, जो 10 हजार से अधिक संख्या में प्रकाशित हो रही है। साथ ही लेखकों को 500 रूपये से लेकर 10 हजार रूपये तक मानदेय दिया जाता है। सरकारी के साथ ही निजी प्रकाशकों में यह पहला उदाहरण है, जहां इतनी बढ़ी राशि मानदेय के रूप में दी जाती है।

मध्यप्रदेश संदेश का उद्भव और इतिहास गौरवशाली रहा है। इसकी शुरूआत 1852 में अखबार ग्वालियर से हुई। ग्वालियर महाराज जयाजीराव सिंधिया को समाचार सुनने का शौक था। इनके इस शौक ने ही ग्वालियर में आलीजाह दरबार प्रेस की स्थापना करवाई। इसी प्रेस से जनवरी 1852 में एक साप्ताहिक पत्र अखबार ग्वालियर का प्रकाशन शुरू किया गया। पत्र में ग्वालियर रियासत के समाचारों को प्रमुखता से प्रकाशित किया जाता था। इसका उद्देश्य ही रियासत के निर्णय को आम जनता तक पहुंचाना था। बाद में इसका नाम ग्वालियर गजट हो गया। 1905 में इसका नाम जयाजी प्रताप रखा गया।

जयाजी प्रताप में लोगों की रूचि को ध्यान में रखते हुए समाचारों का प्रकाशन किया जाता था । ऐसे कई समाचार देखने को मिलते है, जिससे यह बात स्पष्ट होती है कि समाचारों के प्रकाषन में लोकरूचि को सबसे ज्यादा महत्व दिया जाता था। समाचारों की प्रस्तुति भी रोचक थी।

''आग....आग....आग..! घर में आग, कलकत्ते में आग, सूरत, अहमदाबाद, थाने में आग, समाज में आग, देश में आग, लोगों के हृदय में आग, आग की आग, द्वेष की आग, लोक की आग, अभिमान की आग, अकाल की आग, जिधर देखो उधर आग ही आग जल रही है। बिना ही आग की लपटों से बारहों महान होली बनी रहती है फिर यह तो होली का सप्ताह है। इसमें आग का क्या कहना। थाना जिले के धराऊ ग्राम में आग लगने से उठारा घर जल गये हैं। जिसमें

ISSN: 2394-773X
Vol-06-Issue-06-June-2020

स्कूल और पोस्ट आफिस भी स्वाहा हो गया है। तीन लड़कों का पता नहीं है, कई गाय–भैसें जल मरी हैं। चिपलून में भयंकर आग लगी है, जिसमें एक लाख से अधिक की हानि हुई। कलकत्ते का सुलकिया मिल जलने से तीन लाख की हानि हुई है। छोटी मोटी आग और भी कई स्थानों पर लगी है। ईष्वर से प्रार्थना है कि होली के साथ ही सब प्रकार का अग्नि प्रकोप भस्म हो जाये।''

भारत की आजादी के बाद 1950 में यह मध्यभारत संदेश के नाम से प्रकाशित हुआ। जयाजी प्रताप से यह 'मध्यभारत संदेश' में रूपान्तरित हुआ। 14 जनवरी 1950 को 'जयाजी प्रताप की विदाई' शीर्षक से सम्पादकीय लिखा गया– ''जयाजी प्रताप ने जनता की सेवा की पवित्र भावना लेकर आज से ठीक 42 वर्ष पूर्व जनवरी 1905 में, जन्म ग्रहण किया था, एक ऐसे युग में, जब मध्यभारत में तो क्या समस्त भारत में समाचार पत्रों का बाल्यकाल था और कुछ इने गिने पत्र ही जनता की सेवा कर रहे थे। जयाजी प्रताप अपने को 'मध्य भारत संदेश' में विलीन कर रहा है। देश हित की उदार भावना से, जिससे ग्वालियर राज्य ने अपने को मध्य भारत में विलीन किया। यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि 'जयाजी प्रताप', 'मध्य भारत संदेश' में अपना रूपान्तरण मात्र कर रहा है।' 26 जनवरी 1950 को मध्य भारत संदेश का प्रवेषांक निकला। यह एक विषेषांक था, जो जनतंत्र पर आधारित था। प्रथम पृष्ठ पर राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद का फोटो प्रकाशित किया गया था। साथ ही तीन और महान स्वतंत्रता सेनानियों के फोटो भी थे। यह भी अर्द्ध साप्ताहिक ही था। रामकिषोर शर्मा मध्यभारत संदेश के प्रथम सम्पादक थे।

मध्यप्रदेश की स्थापना के साथ ही 1956 में इसे मध्यप्रदेश संदेश से पहचान मिली। खास बात यह है कि अखबार ग्वालियर के प्रकाशन के समय से लेकर मध्यप्रदेश संदेश तक के सफर में इसका उद्देश्य सरकारी नीतियों और निर्णयों पर फोकस रहा, जिसका उद्देश्य लोगों को अधिक से अधिक जानकारी देकर जागरूक करना था। मध्यप्रदेश संदेश के नाम से शुरू होने के बाद भी यह पत्रिका पूरी तरह से सरकार का मुखपत्र ही बनी रही। इसमें सरकारी सूचनाओं और आंकड़ों से जुड़ी जानकारी को प्रमुखता से प्रकाशित किया जाता है। कहानी, कविताएं जरूर होती थी, लेकिन वह ज्यादा प्रभावी नहीं थी। सामग्री का सरकारीकरण हो जाने के कारण आदमी के लिये यह रूचिकर नहीं थी। लम्बे समय ये यूं ही सरकारी तंत्र का हिस्सा बनी रही और नीरस सामग्री के साथ इसका प्रकाशन जारी रहा। 1983–84 में इसकी सामग्री पर चिंतन किया गया और इसे आम आदमी की पसंद का बनाने के लिये कई बदलाव किये गए।

संदेश सरकारी आंकड़ों से मुक्त होकर अच्छी सामग्री की और बढ़ी। एक कवर स्टौरी के साथ ही कुछ कॉलम भी तय किये गए। ऐसी सामग्री का चयन किया जाना तय किया गया जो सरकारी होने के साथ ही लोगों को रूचिकर लगे। मध्यप्रदेश का समाज, संस्कृति, परम्पराओं, त्योहारों, मेलों, पुस्तक समीक्षा, खेल गतिविधियों के साथ ही लोगों के जीवन से जुड़ी गतिविधियों को पत्रिका का हिस्सा बनाया गया। कविता और कहानियों का प्रकाशन बंद कर दिया गया, तर्क दिया गया कि साहित्य से जुड़ी सामग्री छापने के लिये प्रदेश सरकार की साहित्य अकादमी काम कर रही है। प्रदेश की भौगोलिक स्थिति क्या है?, परम्पराओं का क्या महत्व है? अलग–अलग क्षेत्रों में खान–पान कैसा है? ऐतिहासिक महत्व के साथ ही गौरवशाली इतिहास जैसे विषय पत्रिका की विषय वस्तु बने। यह एक बड़ा बदलाव था। सरकारी आंकड़ों से निकलकर यह पत्रिका आम आदमी के विषय वाली पत्रिका बनी। श्री दिग्विजयसिंह के मुख्यमंत्री रहते हुए इसे करीब दस साल के लिये बंद कर दिया गया। 1994 से लेकर 2003 तक यह प्रकाशित नहीं हुई। राजनीति के साथ ही इस पर खर्च होने वाली राशि भी एक मुद्दा बना और इसे प्रकाशित नहीं करने का निर्णय सरकार ने लिया। सुश्री उमा भारती के मुख्यमंत्री बनने के बाद इसे फिर से 2004 में शुरू किया गया। विकास के दौर में एक खास बदलाव और किया गया 2008 से इस पत्रिका में सम्पादकीय शुरू किया गया। साथ फिल्मों को भी जगह मिली। आज इसकी गिनती सरकारी पत्रिकाओं में सबसे ऊपर होती है। समय के साथ ही इसमें एक बड़ा बदलाव यह हुआ कि यह ऑनलाइन भी उपलब्ध है।

खास बात यह है कि समय के साथ इसमें बदलाव भी होता चला गया, जबकि अधिकांश पत्रिकाओं ने सामग्री में बदलाव नहीं किया और बेसमय बंद हो गयी। सम्पादकीय, संवाद, चर्चा, व्यक्तित्व, निर्देश, पहल, समारोह, किताब,पर्व, संस्थान, साक्ष्य, सनद, विमर्श, संकल्प, आस्था, परिक्रमा, निर्णय, विकास, अच्छी तस्वीर, प्रगति, पुरावैभव इसके प्रमुख स्तंभ है।

संदेश की प्रकाशित सामग्री ठोस आधारों पर होती है। कोई भी सामग्री हवा में प्रकाशित नहीं की जाती है। प्रदेश की जानकारी हो या फिर सरकार के निर्णय, हर सामग्री प्रमाणित होती है। पाठकों की राय के आधार पर विशेष विषय पर भी सामग्री का प्रकाशन भी किया जाता है। साथ ही समय–समय पर किसी एक विषय पर विशेषांक भी प्रकाशित किये जाते है। एक बानगी– ''मध्यप्रदेश में आयोजित होने वाला सांस्कृतिक अनुष्ठान

ISSN: 2394-773X
Vol-06-Issue-06-June-2020

अखिल भारतीय कालिदास समारोह आज अपनी राष्ट्रीय पहचान ही नहीं, अपितु अन्तर्राष्ट्रीय पहचान बन चुका है। यह समारोह भारत की संपूर्ण सांस्कृतिक विरासत का समकालीनता में पर्याय बन चुका है। भारत की सांस्कृतिक राजधानी उज्जैन में कवि कुलगुरू कालिदास का स्मृति महोत्सव अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित हो इसका स्वप्न मालवा के सांस्कृतिक नवजागरण के पुरोधा पद्मभूषण पण्डित सूर्यनारायण व्यास ने देखा था। कालीदास स्मृति महोत्सव के अन्तर्गत 1938 से ही आकाशवाणी पर भी महाकवि से सम्बधित वार्ताओं का प्रसारण होने लगा। ''

सम्पादकीय में भी ऐसे विषयों का चयन किया जाता है जो लोगों को जानकारी देने वाले होते है। सामान्यत सम्पादकीय में विचारों की प्रधानता होती है, लेकिन मध्यप्रदेश संदेश में कुछ नया किया जाता है।
'' बच्चों से जुड़े हुए सरोकारों के लिये मध्यप्रदेश सरकार सदैव संवदेनशील रही है। राज्य सरकार ने एक बार फिर बेटियों की सुरक्षा केलिऐ सबसे महत्वपूर्ण कदम उठाकर समूचे देश को न सिर्फ एक अहम संदेश दिया है, बल्कि अपराधियों में खौफ भी पैदाकियाहै कि अब वे किसी भीकीमत पर बख्शे नहीं जाएंगे। पूर्व में 26 नवम्बर को हुई मंत्रिपरिषद कीबैठक मेंइस अध्यादेश को मंजूरी दी गई कि राज्य में12 साल या इससे कमउम्र की नाबालिगों से दुष्कर्म करने वाले दोषियों को फांसी की सजा दी जाएगी। इस दृष्टि से मध्यप्रदेश ऐसा पहला राज्य है। दुष्कर्मी आरोपियों की जमानत राशि भी बढ़ाकर एक लाख रूपये कर दी गयी है। मंत्रिपरिषद की बैठक में मंजूरी मिलने के पश्चात 4 दिसम्बर को मध्यप्रदेश दण्ड विधि विधेयक 2017''मध्यप्रदेश संशोधन'' राज्य विधानसभा के शीतकालीन सत्र में मंजूर हुआ। समाज के सभी तबके के हर आयु वर्ग के लोगों ने इस कदम का खुले दिल से स्वागत करते हुए मुख्यमंत्री के इस कदम की मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। ''

मध्यप्रदेश से जुड़ी जानकारी होने के कारण प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने वाले परीक्षार्थी इसका सबसे बड़ा पाठक वर्ग है। परीक्षार्थी को महत्वपूर्ण जानकारी इससे मिलती है। साथ ही प्रदेश के इतिहास, भूगोल और समसामयिक जानकारी चाहने वाले भी इसका पाठक वर्ग है, जिसमें वरिष्ठजन विशेष रूप से शामिल है। एक बानगी– ''मध्यप्रदेश में बीते दो साल में एक लाख 52 हजार 157 एमएसएमई इकाइयां स्थापित हुई है। इन इकाइयों में तकरीबन 5 लाख 81 हजार से अधिक लोगों को रोजगार मिला है। साथ ही 15 हजार 91 करोड़ से अधिक राशि का पूंजी निवेश हुआ है। वर्ष 2016–17 में 87 हजार 71 एमएसएमई इकाइयां स्थापित हुई। इनमें 80 हजार 688 सूक्ष्म, 6140 लघु एवं 243 मध्यम उद्योग इकाइयां है। इनमें 3 लाख 63 हजार 812 लोगों को रोजगार मिला और 9547 करोड़ 32 लाख का पूंजी निवेश हुआ।''

समसामयिक विषयों पर फोकस किया जाता है, जिसकी भाषा सरल और सहज होती है। खास बात यह भी है कि पत्रिका में समाचारों को भी प्रमुखता से प्रकाशित किया जाता है।
'' मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान ने 22 नवंबर को उज्जैन में विशाल किसान सम्मेलन में कहा कि राज्य सरकार किसानों को हर संकट से निजात दिलाएंगी। भावांतर भुगतान योजना में पंजीकृत 1.35 लाख किसानों के खातों में लेपटॉप से एक क्लिक पर 135 करोड़ रूपये की भावांतर राशि चली गयी। मुख्यमंत्री ने किसानों को भावांतर राशि के प्रमाण पत्र भी वितरित किये।''

एक समय पत्रिकाएं मनोरंजन का बड़ा माध्यम हुआ करती थी। टेलीविजन ने पत्रिकाओं को सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचाया। फिर रही सही कसर मोबाइल ने पूरी कर दी। मोबाइल ने तो पत्रिकाओं की हत्या ही कर दी। आज तो हालत यह है कि बच्चे पत्रिकाओं को जानते ही नहीं है। इलेक्ट्रानिक उपकरणों ने तो पत्रिका का बाजार खत्म सा कर दिया। एक समय था जब धर्मयुग और कादम्बिनी का इंतजार रहता था, लेकिन अब यह इंतजार खत्म हो गया है। मनोरंजन के अन्य साधन आने के कारण भी पत्रिकाओं का क्रेज कम हुआ। पत्रिकाओं के सामने सबसे बढ़ी चुनौती तो पाठकों को रोकने की है। नया पाठक वर्ग खड़ा करने के साथ ही पाठकों को सामग्री पर रोकना जरूरी है। पत्रिका के पास पाठक ही नहीं होंगे तो उसे चलाना मुश्किल होगा।
हालॉकि संदेश इसमें सफल रहा है। ऐसे में मध्यप्रदेश संदेश का बने रहना अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है, वह भी सरकारी व्यवस्था के तहत।

संदर्भ

– **पंत, एन., (2002).** पत्रकारिता का इतिहास. तक्षशिलाा प्रकाशन. नई दिल्ली.

ISSN: 2394-773X
Vol-06-Issue-06-June-2020

– **श्रीधर, वी., (2017).** मध्यप्रदेश में पत्रकारिताः उद्‌भंव और विकास. मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी. भोपाल.

**– द्विवेदी, डी.,(2017). आखिर क्यों जरूरी है पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन. राष्टभाषा भारती. अंक–111. नई दिल्ली.**

**– यादव, ए., (2017, दिसम्बर). पाठकों और पुस्तकों के बीच बढ़ती दूरियां, इंदौर लिटरेचर फेस्टिवल. इंदौर.**

**– '' मैगजीन जर्नलिस्म के भविष्य पर विशेषज्ञों ने जताया भरोसा''(2017). मूल्यानुगत मीडिया. वर्ष 10. अंक9. पेज 9.**

सम्पर्क– 9826380480